नए साल की शुभकामनाएं

राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड की ओर से

यह नववर्ष भारत और अमेरिका के संबंधों में एक नए और बहुत उत्पादक युग का सूत्रपात करेगा। कई दशकों तक हमारे दोनों देशों के संबंधों को बीसवीं सदी के सबसे अपरिपूर्ण गठबंधन के रूप में देखा जाता रहा लेकिन एक सच्ची रणनीतिक साझेदारी ने वर्ष 2006 को अमेरिका-भारत संबंधों के इतिहास में सबसे गतिशील वर्ष बना दिया है। इस साझेदारी के परिणामों का लाभ अमेरिकी जन, भारतीय जन और पूरे संसार को प्राप्त होगा और हम संबंधों के विकास की गति को बढ़ाने के कगार पर हैं।

आज, अमेरिका-भारत संबंधों में तेजी से विकास हो रहा है, उनमें व्यापक आपसी संपर्क भी हो रहा है। हम पहले की अपेक्षा बहुत अधिक क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं और मैं मानता हूं कि हमारे संबंधों की व्यापकता निरंतर बढ़ेगी। दोनों देशों के बीच पहले की तुलना में कहीं अधिक लोगों का आवागमन हो रहा है और इसमें कुछ योगदान भारतीयों के वीज़ा साक्षात्कारों के लंबित मामलों को खत्म करने के हमारे दूतावास और वाणिज्य दूतावासों के संकल्प का भी है। व्यापार और व्यवसाय बढ़ रहा है। हमारे वैज्ञानिक रोगों से लड़ने और नई प्रौद्योगिकियां विकसित करने की नई तरकीबें खोज रहे हैं। हमारे आदान-प्रदान में क्षमताओं के प्रति आशावाद के भाव का वास्तविक पुट है।

हाल ही में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने हमारे देशों के बीच शांतिपूर्ण परमाणु सहयोग संबंधी विधेयक पर हस्ताक्षर करके परमाणु अप्रसार मुख्यधारा से भारत के अलग-थलग पड़ जाने को खत्म कर दिया। इससे नागरिक परमाणु ऊर्जा, वैश्विक परमाणु अप्रसार को बढ़ावा देने और कई अन्य क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग की अपार संभावनाएं खुलेंगी। और भी महत्वपूर्ण यह है कि खुलेपन की प्रक्रिया का पूरा होना हमारे संबंधों पर दशकों से छाई अविश्वास और संदेह की पर्तों से आगे एक बड़ा कदम होगा।

नागरिक परमाणु ऊर्जा पर हमारा सहयोग संसारभर के लोगों के लिए अधिक सुरक्षा तैयार करने की एक जटिल अंतरराष्ट्रीय पहल पर हमारे मिलकर काम कर पाने का संकेत है। हम अशांत देशों में लोकतंत्र को प्रोत्साहित करने, अपने नागरिकों और संसार के लिए आर्थिक अवसर और विकास को प्रोत्साहित करने और पुरानी ऊर्जा समस्याओं के नए हल ढूंढ़ने, जिनमें कोयले और हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों का विकास भी शामिल है, जैसी गतिविधियों में हाथ मिला रहे हैं। एशिया-प्रशांत भागीदारी में हमारा सहयोग पर्यावरण प्रबंधन को सुनिश्चित करते हुए निजी क्षेत्र की गतिशीलता का भरपूर लाभ उठाने में हमारी साझी रुचि को प्रतिबिंबित करता है। इसका मकसद है आर्थिक विकास और ऊर्जा सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

इन क्षेत्रों में हमारी सफलता से न केवल भारत को एक बेहतर राष्ट्र और वैश्विक महाशक्ति बनने में सहायता मिलेगी बल्कि उसके नागरिकों को भी देश के तेजी से बढ़ते अर्थतंत्र के लिए स्वच्छ और सुलभ ऊर्जा, किसानों के लिए नई प्रौद्योगिकियां, छात्रों के लिए नए अवसरों और एचआईवी-एड्स जैसी बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान जैसे ठोस लाभ प्राप्त होंगे।

आज हमें इस गतिशीलता, ऊर्जा और प्रेरणा का भरपूर लाभ पाने के तरीकों के बारे में सोचना होगा। अभी-अभी व्यावसायिक वायुयानों की भारत की सबसे बड़ी खरीद के अंतर्गत बोइंग कॉर्पोरेशन ने पहले विमान की आपूर्ति की है। आईबीएम और मोटरोला जैसी बड़ी अमेरिकी कंपनियां भारत में मैनुफैक्चरिंगकी दिशा में कदम बढ़ा रही हैं तो इन्फोसिस, रैनबैक्सी और टाटा जैसी भारतीय कंपनियां आत्मविश्वास के साथ अमेरिकी बाज़ार में प्रवेश कर रही हैं।

हम अंतरिक्ष और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में सहयोग की पहलकदमी कर रहे हैं। हमारी सेनाएं उन कदमों को तलाश रही हैं जिससे वैश्विक समृद्धि और स्वतंत्रता को पुष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों और व्यापार मार्गों में अधिक स्थिरता सुनिश्चित हो और आंतकवाद से लड़ा जा सके। हमारा भविष्य, हमारे युवा, हमारे शिक्षण संस्थानों में और इंटरनेट के जरिये और निकट आ रहे हैं।

अमेरिका और भारत साझे आधारभूत मूल्यों और रुचियों वाले सहयोगी हैं, मिलकर काम करने से दोनों को ही बहुत लाभ होगा। हमारे समग्र संबंध में जन संबंध अधिकाधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। भारतीय अमेरिकी नागरिक अमेरिकी समाज, व्यवसाय और उच्च शिक्षा में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में अपनी जगह बना चुके हैं।

इस साझेदारी के संभव हो पाने के कई कारण हैं लेकिन इसका सबसे बड़ा आधार है हमारे समाजों की साझी अभिलाषाएं। हम कानून, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आर्थिक अवसरों का सम्मान करने वाले खुले, लोकतांत्रिक, बहुजातीय और बहुधर्मी लोकतंत्र हैं।

वर्ष 2007 की शुरूआत करते हुए हमें अब तक की अपनी उपलब्धियों पर वास्तव में गर्व होना चाहिए। साथ ही हमें भविष्य की संभावनाओं को भी पहचानना होगा। मिलकर काम करते हुए अमेरिका और भारत 21वीं सदी में वैश्विक स्थिरता और समृद्धि के पक्ष में एक महत्वपूर्ण शक्ति हो सकते हैं।

राष्ट्रपति बुश अमेरिका-भारत शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा सहयोग अधिनियम पर हस्ताक्षर करते हुए। उनके साथ हैं: भारत के राजदूत रमिंदर सिंह जस्सल, अमेरिकी विदेश मंत्री कोंडोलीज़ा राइस, कांग्रेस सदस्य थैडियस मैक्कॉटर, गैरी एकरमैन और जोसेफ क्राउले, सीनेटर रिचर्ड लुगार, बिल फ्रिस्ट और जॉर्ज एलेन।

रॉन एडमंड्स © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.